



अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

66
बुद्धि

बुद्धि तिणां री जाणिये, जो सेवे जिनधर्म।
अवर बुद्धि किण काम री, जो पडिया बांधे कर्म।।

उनकी बुद्धि ही परमार्थतः बुद्धि है
जो जिनधर्म का सेवन करते हैं।
वह बुद्धि किस काम की, जिससे
कर्म का बंधन हो।

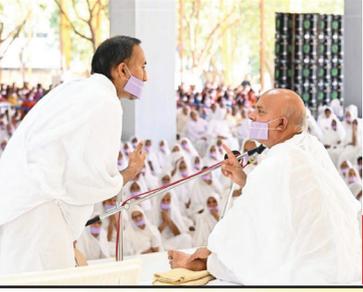
- आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली

वर्ष 27 • अंक 22 • 02 मार्च - 08 मार्च 2026

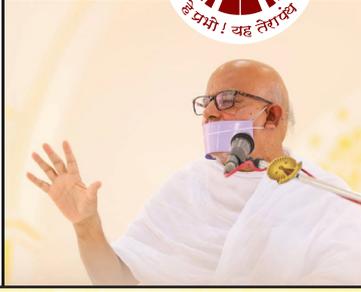


प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 28-02-2026 • पेज 12 • ₹ 10 रुपये



सम्यक् ज्ञान और
दर्शन के होने से होता
है सम्यक् चारित्र :
आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 03



योगक्षेम वर्ष में 32
आगम के स्वाध्याय का
लक्ष्य रहे : आचार्यश्री
महाश्रमण

पेज 10

Address
Here

सम्यक् ज्ञान और सम्यक् दर्शन है आचार की पृष्ठभूमि : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनू।

24 फरवरी, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान अधिशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, महातपस्वी, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी योगक्षेम वर्ष के संदर्भ में जैन विश्व भारती लाडनू में प्रवासित हैं। आज के मुख्य प्रवचन कार्यक्रम का शुभारंभ आचार्य प्रवर के मंगल महामंत्रोच्चार के साथ हुआ। साध्वी वृंद द्वारा प्रज्ञा गीत का संगान किया गया। तदुपरान्त आज के निर्धारित विषय "आचार की पृष्ठभूमि" पर आधारित पावन पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि 'आचार की पृष्ठभूमि' आज का विषय है। व्यक्ति सदाचार के पथ पर चलता है, उच्च आचार का पालन करता है। साधुत्व के रूप में भी आचार



का पालन हो सकता है, श्रावकत्व के रूप में भी आचार फलित हो सकता है और सामान्य व्यक्ति भी अणुव्रत आचार संहिता आदि को मानकर अथवा अपने

दंग से सदाचार का पालन कर सकता है। यहां प्रश्न है कि आचार की पृष्ठभूमि क्या है? किस भूमिका के आधार पर आचार का पालन हो सकता है?

आगम वाणी से हम एक आधार प्राप्त कर सकते हैं कि चारित्र, सम्यक्त्व विहीन नहीं हो सकता। यदि सम्यक्त्व नहीं है तो सम्यक् आचार और सम्यक् चारित्र हो नहीं सकता। परन्तु चारित्र के बिना सम्यक्त्व स्वतंत्र रूप में हो सकता है। सम्यक्त्व और चारित्र एक साथ भी हो सकते हैं अथवा पहले सम्यक्त्व और बाद में चारित्र हो सकता है। सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, आचार की पृष्ठभूमि मानी जा सकती है। सामान्य तौर पर देखें तो व्यक्ति का जैसा विचार होता है उसी के अनुरूप ही व्यक्ति का आचार भी बन सकता है। ज्ञान को आचार तक लाने के लिए दर्शन रूपी सेतु की आवश्यकता होती है। पहले व्यक्ति ज्ञान प्राप्त करता है फिर जब सीखे हुए ज्ञान पर आस्था और श्रद्धा होती है तब वह बात आचार में परिणित हो जाती है। दूसरे शब्दों में

कहें तो विचार, संस्कार और आचार। पहले विचार होता है जब विचार गहरा हो जाता है तो वह संस्कार बन जाता है वह आचार के रूप में परिणित हो जाता है। अतः सम्यक् ज्ञान और सम्यक् दर्शन को आचार की पृष्ठभूमि के रूप में देखा जा सकता है।

व्यक्ति का व्यवहार प्रामाणिक होना चाहिए। कोई भी बात बतानी हो तो उसका प्रमाण पास में होना चाहिए। बिना पुष्ट जानकारी के कोई भी बात नहीं कहनी चाहिए। वचन में प्रामाणिकता पर सूक्ष्मता से ध्यान देने का प्रयास करना चाहिए कि कोई भी मिथ्या बात मुंह से न निकले। इसलिए व्यक्ति का व्यवहार भी प्रामाणिकता से पूर्ण होना चाहिए। आचार की पृष्ठभूमि में सम्यक् ज्ञान व सम्यक् दर्शन पुष्ट रहे तो आचार भी सम्यक् हो सकता है। (शेष पेज 9 पर)



तेरापंथ टाइम्स परिवार
की तरफ से सभी पाठकों को
होली की हार्दिक शुभकामनाएं

व्यवहार में निक्षेप की है अत्यंत महत्ता : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनू।

23 फरवरी, 2026

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, तीर्थंकर भगवान महावीर के प्रतिनिधि, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के मंगल महामंत्रोच्चार के साथ मुख्य मंगल प्रवचन कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। साध्वी वृंद ने प्रज्ञा गीत का संगान किया। शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आर्हत वाङ्मय पर आधारित अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि हम व्यवहार के जगत में जी रहे हैं। संसारी प्राणी और विशेषतः संज्ञी मनुष्यों का व्यवहार तीन

भागों में विभक्त किया जा सकता है - शब्दाश्रयी व्यवहार, अर्थाश्रयी व्यवहार और ज्ञानाश्रयी व्यवहार। व्यवहार अर्थात् लेनदेन करना, कोई बात बताना, किसी को बुलाना, नाम से पुकारना, कुछ कहना-सुनना, किसी वस्तु का आदान प्रदान करना आदि जीवन के व्यवहार हैं। शरीर होने से व्यवहार भी अनिवार्य हो जाते हैं। सिद्ध भगवन्तों को हम व्यवहार मुक्त अथवा व्यवहार से ऊपर कह सकते हैं। चौदहवें गुणस्थान के महामुनि अयोगी अवस्था को प्राप्त शैलेषी अवस्था में स्थित हैं उन्हें भी व्यवहार मुक्त अवस्था में देखा जा सकता है।

व्यवहार की व्यवस्था सुचारू



रूप से चले इस संदर्भ में निक्षेप की आवश्यकता होती है। वस्तु बोध की दृष्टि निक्षेप है। यदि निक्षेप व्यवस्था न हो तो व्यवहार भी काठिन्यपूर्ण हो सकता

है। शब्दाश्रयी, अर्थाश्रयी और ज्ञानाश्रयी व्यवहार की आपस में सम्यक् व्यवस्था रहे तो व्यवहार ठीक चल सकता है। उदाहरणार्थ गुरु, शिष्य से प्रमार्जनी लाने

हेतु कहते हैं तो विनीत शिष्य प्रमार्जनी लाकर तत्काल गुरु को सौंपते हैं। यहां गुरु ने प्रमार्जनी बोला तो शब्दाश्रयी से इस वस्तु की जानकारी हुई। शिष्य को अर्थाश्रयी से इस बात का बोध हुआ कि प्रमार्जनी इसी वस्तु को कहा जाता है। अगर यह बोध न हो कि इसी वस्तु का नाम प्रमार्जनी है तो फिर वह वस्तु नहीं आ पाएगी। यह ज्ञानाश्रयी व्यवहार है। नियत, निश्चित वस्तु का बोध कराने वाला निक्षेप होता है।

प्रमार्जनी शब्द वस्तु विशेष के लिए निर्धारित है और अन्य सब वस्तुएं निराकृत हो जाती हैं, यह नाम निक्षेप है। (शेष पेज 9 पर)



लाडनूं में आयोजित योगक्षेम वर्ष के अवसर पर
परम पूज्य युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी
का सादर अभिनंदन-अभिवंदन

:: श्रद्धाप्रणत ::

श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्व. कन्हैयालालजी-श्रद्धानिष्ठ श्राविका श्रीमती केसरदेवी, स्व. पन्नालालजी-श्रद्धानिष्ठ श्राविका श्रीमती चम्पादेवी,
स्व. नवरतनमलजी-स्व. श्रीमती सायरदेवी, स्व. आनंदमलजी-श्रीमती माणकदेवी,
श्रद्धानिष्ठ श्रावक कमलसिंहजी-श्रीमती लीलादेवी, निर्मलजी-श्रीमती कनकदेवी, नरपतसिंहजी- श्रीमती पुष्पादेवी
रणजीतसिंहजी-श्रीमती ललितादेवी, सुरेंद्रकुमारजी-श्रीमती सरिता, राजेंद्रकुमारजी-श्रीमती सरोज, विजयसिंहजी-श्रीमती जयश्री,
अजीतजी-श्रीमती प्रमिला, दिलीपजी-श्रीमती मंजू, प्रकाशजी-सुधाजी, नरेंद्रकुमारजी-श्रीमती भारती, अमनजी-श्रीमती ज्योति,
चमनजी-श्रीमती प्रेरणा, नमनजी-श्रीमती कविता, निखिलजी-श्रीमती विभा, मोहितजी-श्रीमती नेहा, हर्षजी-श्रीमती अंकिता
कोशिक, पीयूष, संभव, दीपम, अरविंद, आर्यन, आकाश, आयुष, अभिनव, अर्णव, अरव, ऋषित, प्रीतिश, चिराग, सक्षम

❧ **बैद परिवार-लाडनूं** ❧

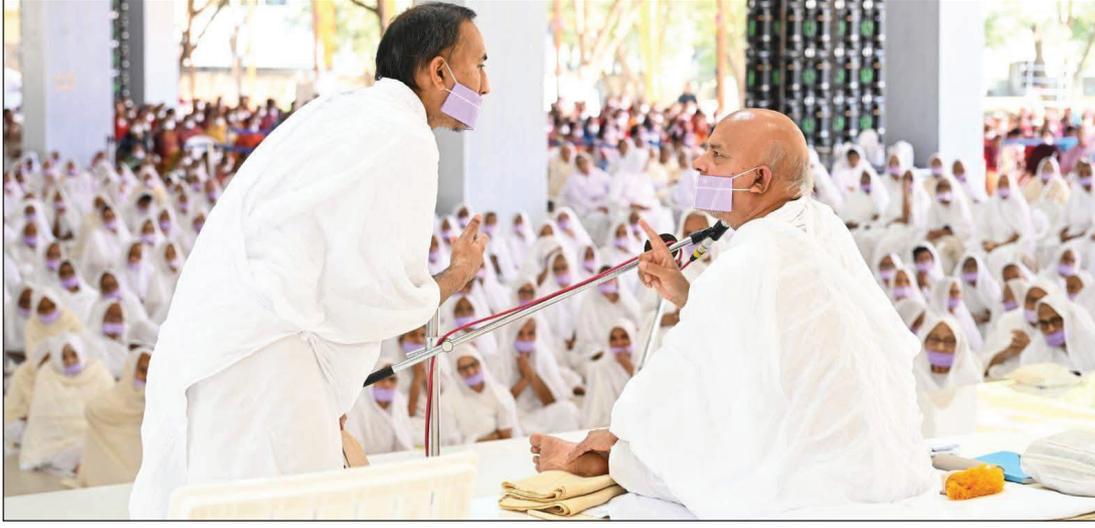
सम्यक् ज्ञान और दर्शन के होने से होता है सम्यक् चारित्र : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनू।

21 फरवरी, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशस्ता, महातपस्वी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के मंगल महामंत्रोच्चार के साथ आज के मुख्य प्रवचन कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। तदुपरान्त साध्वी वृंद ने गीत का संगान किया।

समुपस्थित चतुर्विध धर्मसंघ को आर्हत वाङ्मय के माध्यम से अमृत देशना प्रदान करते हुए शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी ने फरमाया कि पांच शब्द हैं - गंता, गंतव्य, गति, मार्ग और मार्गदर्शक। जो गति करता है, वह गंता होता है। जहां पहुँचना है अर्थात् जो हमारी मंजिल या लक्ष्य है वह गंतव्य होता है। गंता और गंतव्य के मिलन के लिए गंता को गति करनी होगी। गंतव्य तक गति करने के लिए मार्ग की आवश्यकता होती है। प्रश्न है कि गंता, गति किधर करे? किस मार्ग पर करे, इसके लिए मार्गदर्शक की अपेक्षा होती है। अतः गंता, गंतव्य, गति, मार्ग और



मार्गदर्शक ये पांच चीजें होती हैं तो कोई गंता गंतव्य तक पहुँच सकता है।

अध्यात्म के संदर्भ में साधना करने वाला व्यक्ति गंता होता है। गंतव्य मोक्ष होता है। साधना, आराधना करना गति हो जाता है। प्रश्न है कि गति कहां करें? आगम में कहा गया - ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप के मार्ग पर गति करें इनकी आराधना करें। अतः ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप रूपी चतुरंगीण मार्ग होता है। मार्ग पर चलने के लिए एक

मार्गदर्शक चाहिए तो हमारे तीर्थंकर गुरु मार्गदर्शक हो जाते हैं।

मोक्ष प्राप्ति के लिए सम्यक्त्व का भी बहुत महत्त्व है। सम्यक् दर्शन के बिना सम्यक् ज्ञान नहीं होगा और सम्यक् ज्ञान के बिना सम्यक् चारित्र का गुण नहीं आएगा और सम्यक् चारित्र के बिना निर्वाण अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति नहीं होगी। इस संदर्भ में सम्यक्त्व का महत्त्व परिलक्षित हो रहा है। यद्यपि जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्म संघ में आगमिक

आधार पर मिथ्यात्वी की करणी को भी मोक्ष की देश आराधिका माना गया है परन्तु उसका थोड़ा ही लाभ माना जा सकता है। सम्यक्त्व युक्त क्रिया का लाभ मिथ्यात्वी की क्रिया की तुलना में बहुत अधिक होता है। अतः सम्यक्त्व रत्न से बड़ा कोई रत्न नहीं, सम्यक्त्व रूपी भाई से बड़ा कोई भाई नहीं। सम्यक्त्व स्वतंत्र हो सकता है, परन्तु चारित्र सम्यक्त्व के बिना नहीं हो सकता है।

पूज्य प्रवर ने कहा कि योगक्षेम वर्ष

के दौरान जो प्राप्त नहीं है, उसे प्राप्त करने का अच्छा मौका है। योगक्षेम वर्ष में चिंतन-मंथन के संदर्भ में आचार्य श्री ने साधु-साध्वियां, समणियों के समक्ष सम्यक्त्व और चौथे गुणस्थान में औपशमिक सम्यक्त्व संबंधी चिंतन हेतु विषय रखे। तत्पश्चात् एक जिज्ञासा का अवसर प्रदान किया तो साध्वीश्री ने अपनी जिज्ञासा प्रस्तुत की तथा आचार्य प्रवर ने समाधान प्रदान किया।

लाडनू में ही स्थित साध्वी सेवा मंदिर में दिनांक 20.02.2026 को साध्वी श्री सूरजकुमारीजी का देवलोक गमन हो गया था। इस संदर्भ में आज उनकी स्मृति सभा का आयोजन हुआ जिसमें आचार्यश्री ने साध्वी श्री सूरजकुमारीजी का संक्षिप्त परिचय प्रदान किया तथा उनकी आत्मा के प्रति आध्यात्मिक मंगल कामना की। आचार्यश्री के साथ चतुर्विध धर्मसंघ ने चार लोगसस का ध्यान किया। मुख्यमुनिश्री महावीरकुमारजी, साध्वी प्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी, साध्वी वर्या श्री संबुद्धयशा जी ने भी दिवंगत साध्वीश्री जी की आत्मा के आध्यात्मिक ऊर्ध्वारोहण की मंगलकामना की।

आगमवाणी श्रवण करने का अवसर मिलना सौभाग्य की बात : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनू।

18 फरवरी, 2026

जैन विश्व भारती परिसर में बने भव्य सुधर्मा सभा में जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान अधिशास्ता, महातपस्वी, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की पावन सन्निधि में योगक्षेम वर्ष के संदर्भ में चल रहे त्रिदिवसीय अनुष्ठान का आज अंतिम दिवस था। शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी ने चतुर्विध धर्मसंघ को आध्यात्मिक अनुष्ठान के अन्तर्गत विभिन्न मंत्रों का जप कराया। तत्पश्चात् मुनि कुमारश्रमणजी ने प्रेक्षाध्यान संदर्भ विशेष जानकारी प्रदान की। मुनि योगेश कुमारजी ने तत्त्वज्ञान की कक्षाओं से संबंधित जानकारी दी। साध्वी कनकश्री जी ने जैन तत्त्वदर्शन के साध्वी व समणियों के प्रशिक्षण के संदर्भ में जानकारी दी।

तत्पश्चात् युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने चतुर्विध धर्मसंघ को पावन संबोध प्रदान करते हुए फरमाया

कि योगक्षेम वर्ष के संदर्भ में त्रिदिवसीय अनुष्ठान कार्यक्रम का अनुक्रम चल रहा है जिसका आज तीसरा दिन है। योगक्षेम वर्ष के अन्तर्गत सुनना भी एक अच्छा कार्य है। प्रशिक्षक की बात सुनें, प्रवचन सुनें और अन्य कोई प्रेरणादायक बात हो तो उसे सुनें।

इस प्रकार श्रुति भी योगक्षेम वर्ष का मानो विशेष कार्य है। श्रोतेन्द्रिय का बहुत महत्त्व है, जो प्राणी सुनने वाला होता है वही जीव पंचेन्द्रिय प्राणी होता है। श्रोत्र हमें प्राप्त है और सुनने से हमें अनेक जानकारियां मिल सकती हैं। साधु-साध्वियों द्वारा दिया जाने वाला आध्यात्मिक प्रवचन एक पवित्र कार्य है। यह पुनीत आर्षवाणी जब कानों द्वारा सुनी जाती है तो मानों कान धन्य हो जाते हैं। साधु त्यागी हों और साथ में ज्ञानी भी हो तो बहुत अच्छी बात होती है।

चारित्रात्माओं के मुख से आगमवाणी का श्रवण करने का अवसर मिले तो वह सौभाग्य की बात होती है। साधु-साध्वियों, समणियों और गृहस्थों को बहुश्रुत होना



एक बात है और बहुश्रुत होने के साथ-साथ यदि प्रस्तुति की कला भी अच्छी हो जाए तो उसके साथ अच्छी उपलब्धि जुड़ जाती है। कई ऐसे भी होते हैं जिनके पास ज्ञान तो बहुत होता है परन्तु प्रस्तुति ठीक प्रकार नहीं हो पाती।

योगक्षेम वर्ष के अन्तर्गत भाषण, वक्तव्य आदि के प्रशिक्षण का भी उपक्रम रखा जा सकता है। परम पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के प्रवचन की भाषा स्पष्ट व

शुद्ध होती थी और साथ में वैदुष्य भी था। अतः वक्तव्य कला के विकास हेतु पूर्वचार्यों की वाणियों से भी प्रेरणा ली जा सकती है। हमारे कान दो हैं और मुख एक है। इसलिए व्यक्ति को सुनना ज्यादा चाहिए और कम से कम बोलने का प्रयास करना चाहिए।

सुनकर व्यक्ति पाप को भी जान लेता है और कल्याण को भी जान लेता है, उसमें जो भी श्रेयस्कर हो उसका समाचरण

करने का प्रयास करना चाहिए। किसी दुःखी व्यक्ति के दुःख को धैर्य से सुन लें, उसका समाधान दे पाएं या नहीं, उसकी तकलीफों को सुनने मात्र से भी उसे कुछ शांति मिल सकती है। सुनने से कितनी-कितनी प्रेरणा मिल सकती है। आचार्यश्री तुलसी प्रवचन किया करते थे और प्रवचन के बीच में गीत का संगान भी करते थे। उन्होंने अपने प्रवचनों से कितना-कितना ज्ञान प्रदान किया था। जहां भी ज्ञान की बातें हों और अच्छी जानकारी हो उसे ग्रहण करने का प्रयास करना चाहिए। शुद्ध भाषा बोलना, व्याकरण का उच्चारण भी अच्छा होता है तो सुनने वाले को भी अच्छा ज्ञान प्राप्त हो सकता है।

पूज्य गुरुदेव के प्रवचन के पश्चात् साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशाजी ने तत्त्वज्ञान के संदर्भ में जानकारी दी। पूज्य प्रवर ने योगक्षेम वर्ष में चलने वाले नियमित कार्यक्रमों से संबंधित कुछ नियमों आदि के संदर्भ में जानकारी दी। आचार्य प्रवर ने तत्त्वज्ञान और प्रेक्षा ध्यान की कक्षा कल से ही प्रारंभ करने की प्रेरणा दी।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल ने रचा इतिहास

पहले गिनीज़ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स, अब एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में दर्ज उपलब्धि

लाडनू!

जैन विश्व भारती परिसर में स्थित सुधर्मा सभा में विराजमान पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी की पावन सन्निधि में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल (अभातेममं) द्वारा रचित ऐतिहासिक उपलब्धि के उपलक्ष्य में भव्य सम्मान समारोह आयोजित किया गया।

अभातेममं ने सर्वप्रथम 4 फरवरी 2026 को अणुव्रत भवन, नई दिल्ली में आयोजित समारोह में "गिनीज़ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स" में अपना नाम दर्ज करवाते हुए वैश्विक कीर्तिमान स्थापित किया, तत्पश्चात इसी अभियान के लिए "एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स" में भी सम्मानित होकर दोहरा इतिहास रच दिया।

विश्व कैंसर दिवस के अवसर पर अभातेममं द्वारा देशभर में 309 केंद्रों पर 17,200 महिलाओं की निशुल्क पैप स्मीयर जांच करवाई गई। इस विराट स्वास्थ्य-जागरूकता अभियान को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सराहना मिली और पहले गिनीज़ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स



तथा उसके पश्चात एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में विधिवत दर्ज किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल लाडनू एवं अभातेममं के सदस्यों द्वारा मंगलाचरण की प्रस्तुति से हुआ।

अभातेममं की अध्यक्ष श्रीमती सुमन नाहटा ने अपनी भावाभिव्यक्ति में कहा कि प्राप्त आंकड़ों के अनुसार भारत में हर ग्यारह मिनट में एक महिला की मृत्यु सर्वाङ्कल कैंसर के कारण हो रही है। यह महिलाओं में होने वाला दूसरा सबसे सामान्य कैंसर है, जबकि समय पर स्क्रीनिंग एवं जागरूकता से इसका पूर्णतः बचाव संभव है। उन्होंने कहा कि

देशभर की महिला मंडलों की अभूतपूर्व सहभागिता से यह अभियान केवल एक रिकॉर्ड नहीं, बल्कि नारी सशक्तिकरण और सामाजिक उत्तरदायित्व का जीवंत उदाहरण बन गया है। यह उपलब्धि गुरु आशीर्वाद एवं मंगलप्रेरणा का ही परिणाम है।

'एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स' के प्रतिनिधि श्री संजय भोला ने अपने वक्तव्य में कहा कि एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स बनाना कोई आसान कार्य नहीं है, परन्तु इस चुनौतीपूर्ण कार्य को अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल ने सफलतापूर्वक संपादित किया।



उन्होंने पूरी प्रक्रिया पर प्रकाश डालते हुए बताया कि ऑनलाइन फॉर्म के माध्यम से सभी शाखाओं से प्रमाणित आंकड़े एकत्रित कर उन्हें डिजिटल रूप में प्रस्तुत किया गया, जो अनुशासन, संगठनात्मक क्षमता और प्रभावशाली नेतृत्व का उत्कृष्ट उदाहरण है।

पूज्य गुरुदेव ने अपने मंगल वचनों में कहा कि साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी एवं साध्वी कल्पलता जी के निर्देशन में अभातेममं 'अंकुरम गर्भ शिशु संस्कार', 'तत्त्वज्ञान' आदि अनेक उपक्रमों का संचालन कर रही है। संस्था इसी प्रकार आध्यात्मिक विकास और

सामाजिक उत्थान के कार्यों में निरंतर अग्रसर रहे, यही मंगलकामना है।

कार्यक्रम में अभातेममं के पदाधिकारीगण, कार्यसमिति सदस्यों एवं आसपास के शाखा मंडलों की बहनों की भी सक्रिय एवं उत्साहपूर्ण उपस्थिति रही।

यह अभियान संस्था की समृद्ध राष्ट्र योजना के अंतर्गत देश की महिलाओं को सर्वाङ्कल कैंसर के प्रति जागरूक कर उन्हें सुरक्षित एवं स्वस्थ जीवन की ओर प्रेरित करने का सशक्त प्रयास है। स्वस्थ नारी ही स्वस्थ परिवार और स्वस्थ समाज की सुदृढ़ नींव है।

अणुव्रत स्थापना दिवस, कालूगणी जन्म दिवस, योगक्षेम वर्ष मंगलकामना कार्यक्रम का आयोजन

रिसडा।

आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनिश्री जिनेश कुमारजी ठाणा 3 के सानिध्य में आचार्य श्री कालूगणी जन्मदिवस, अणुव्रत स्थापना दिवस व योगक्षेम वर्ष शुभारंभ का मंगलकामना कार्यक्रम तेरापंथ सभा भवन में हुआ। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमारजी ने कहा-आचार्यश्री कालूगणी तेरापंथ धर्म संघ के अष्टम् अधिशास्ता थे। वे निस्पृह साधक निर्विकारी आचार संपन्न महापुरुष थे। उन्होंने अनेक क्षेत्रों का विस्तार किया और स्वयं ने भी यात्रा करके मानवता व जिनशासन की अद्भुत सेवा की। उनमें समझाने की अद्भुत कला थी। उनके शासनकाल में सैकड़ों साधु साध्वी की दीक्षा हुई, उनमें मुनि तुलसी, मुनि नथमलजी धर्मसंघ के क्रमशः नवम् व दशम् अधिशास्ता हुए। उनका व्यक्तित्व बेदाग व चारित्र उज्वल था। मुनिजी ने आगे कहा आचार्य तुलसी मानवता के मसीहा थे। उन्होंने नैतिक मूल्यों के संरक्षण व चारित्रिक उन्नयन के लिए अणुव्रत आन्दोलन का सूत्रपात किया। अणुव्रत असाम्प्रदायिक आन्दोलन है। आज के विषाक्त वातावरण के लिए अणुव्रत सुरक्षा कवच है। अणुव्रत केवल आचार संहिता ही नहीं अपितु यह

जीवन का दर्शन है। धर्म और व्यवहार का सेतु है। अणुव्रत का अर्थ है छोटे नियम। जीवन शुद्धि की न्यूनतम आचार संहिता अणुव्रत है। इसकी साधना हर कोई सम्प्रदाय का अनुयायी कर सकता है। विश्व को अणुबम नहीं अणुव्रत की आवश्यकता है। सभी साधु नहीं बन सकते, लेकिन अणुव्रतों के नियमों की साधना करके जीवन को, परिवार को समाज को शक्तिशाली बना सकते हैं। पर्यावरण को सुरक्षित रख सकते हैं। मुनिजी ने योगक्षेम वर्ष की शुभारंभ पर कहा- मैं कुछ होना चाहता हूँ कि भावना चारों ओर दिखाई देती है। इसी भावना का प्रतिनिधित्व करता हुआ यह वर्ष योगक्षेम वर्ष के रूप में साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा जी के निवेदन पर लाडनू में आचार्य प्रवर के सानिध्य सैकड़ों साधु साध्वियों, समणीयां, मुमुक्षु व श्रावक समाज की उपस्थिति में मनाया जा रहा है। योग का अर्थ है- अप्राप्त से प्राप्त करना व क्षेम का अर्थ जो प्राप्त है उसका संरक्षण करना। योगक्षेम में विशेष रूप से प्रशिक्षण दिया जायेगा। उपासक जुगराज बैद, तेरापंथ सभा अध्यक्ष प्रदीप मणोत, तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष सुनीता सुराणा राजेन्द्र चौपड़ा, उपासक पवन दुगड़ ने शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन मुनिश्री परमानंदजी ने किया।

शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी की स्मृति में

हर पल तेरा नाम
गाऊं शासन माँ

● साध्वी विधिप्रभा ●

हर पल तेरा नाम गाऊं शासन माँ
जीवन की हर शाम तुझसे ही माँ।।
मेरे मन मंदिर में, नयनों में है सूरत,
जागूँ या निंदिया में, रहती तेरी सूरत।
भेर दुपथ्या सन्ध्या, सुख से तेरा स्मरण करूँ,
मैं तो इतना ही जानूँ तेरे चरणों शीश धरूँ।।
हर पल तेरा नाम।।

तुलसी की कृति थी वो, अनुपम सुंदर कल्याणी,
भिक्षु गण की निधि थी वो, सुनते जब मधुरिम वाणी।
जो भी आया चरणों में, झोली भरकर जाता था,
दोनों हाथ लुटाती, आनंद दर पर आता था।।
हर पल तेरा नाम।।

ममता की थपकी देकर, सबको जीना सिखलाया,
जन-जन के मन उलझन को, शांत मना सुलझाया।
अंधियारी राहों में, बन दीपशिखा वो जलती,
अनगिन जन श्रद्धा तुम, अज्ञान तिमिर हरती।।
हर पल तेरा नाम।।

लय- पल पल दिल के पास

शासनमाता तेरी,
गौरव गाथा गाते हैं

● साध्वी रौनकप्रभा ●

शासनमाता तेरी, गौरव गाथा गाते हैं
बगिया सीची करुणा से, यादों में खो जाते हैं।
नारी जाति की शक्ति, मीरा सी अद्भूत भक्ति
भैक्षवगण अनुरक्ति, तेरी जिन्दगी विरक्ति
ममतामयी माँ को, सविनय शीश झुकाते हैं।
गणहित समर्पित कण कण, सेवाएं दी अनमोल
आश्वस्त हृदय हो जाते, सुन तेरे मधुरिम बोल
कार्यकुशलता अद्भुत थी, प्रेरणा हम पाते हैं।
तेरा रूप जब भी निहारू, थकती न मेरी नयना
स्वर कानों में है गुंजे. अब दर्श तुम दे दो ना
तेरे नाम स्मरण से, ऊर्जा हम पाते हैं।

लय: तेरे जैसा यार...

❖ आदर्श चुनने के साथ संकल्प बल का होना भी अपेक्षित है। संकल्प बल के साथ उत्साह व साहस भी बना रहना चाहिए।
- आचार्य श्री महाश्रमण

संक्षिप्त खबर

रिपोर्ट उपनिषद-3 का भव्य समापन

विजयनगर। रिपोर्ट उपनिषद-3 का भव्य समापन कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया। कार्यक्रम मुनि डॉ. पुलकित कुमार जी टाणा-2 के पावन सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में महिला मंडल उपाध्यक्ष सुमित्रा बरड़िया, मंत्री सरिता छाजेड तथा कार्यकारिणी सदस्य बरखा पुगलिया की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का शुभारंभ नवकार महामंत्र के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण कन्या मंडल संयोजिका खुशी मांडोत और महिला मंडल उपाध्यक्ष सुमित्रा बरड़िया द्वारा किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन ज्ञानवी कवड़िया द्वारा किया गया। कार्यक्रम के दौरान अनेक ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजक गतिविधियाँ आयोजित की गईं, जिनमें अंताक्षरी, पिक एंड स्पीक, शनिवार सामायिक, निबंध से तीर्थकरों के नाम खोजने की गतिविधि तथा दादा-दादी और पोतियों के गुणों का आदान-प्रदान शामिल रहा। प्रवचन में पुलकित मुनिश्री जी ने कन्याओं को जीवन में प्रगति के लिए सहिष्णुता के साथ जीने की प्रेरणा दी। साथ ही उन्होंने आधुनिक एवं तकनीकी युग में भी अपने दादा-दादी के साथ समय बिताने का मार्गदर्शन दिया। कार्यक्रम ने दो पीढ़ियों के बीच स्नेह, संस्कार और आध्यात्मिक मूल्यों को और अधिक सुदृढ़ किया।

दीक्षांत समारोह का आयोजन

पनवेल। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में सीपीएस एकेडमी फॉर लीडरशिप एण्ड एक्सीलेंस के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद् - पनवेल द्वारा आयोजित सप्त दिवसीय कॉफिडेंट पब्लिक स्पीकिंग कार्यशाला के दीक्षांत समारोह का अभातेयुप राष्ट्रीय संगठन मंत्री रोहित कोठारी की अध्यक्षता में आयोजन हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि चतरलाल मेहता (अध्यक्ष - तेरापंथी सभा, पनवेल), विशिष्ट अतिथि कमलेश भंसाली (जोनल इंचार्ज, अभातेयुप), सीपीएस के जोनल प्रशिक्षिका खुशी कोठारी, शाखा प्रभारी हेमंत धाकड़, तेयुप अध्यक्ष नरेंद्र गुंदेचा आदि की गरिमामय उपस्थिति रही। सप्त दिवसीय सीपीएस कार्यशाला के 17 सम्भागीयों ने विभिन्न विषयों पर अपनी प्रस्तुति दी।

जप-अभ्यर्थना 2.0 का आयोजन

बेंगलूरु। तेरापंथ समाज के युवा व किशोरों द्वारा जप अभ्यर्थना 2.0 के अंतर्गत 13 दिनों तक अखण्ड जप का क्रम अनवरत संचालित हुआ। सर्वांगीण विकास का लक्ष्य रखने वाली संस्था तेरापंथ युवक परिषद् बेंगलूरु द्वारा अपनी परिषदों के साथियों के माध्यम से दक्षिण जोन में (13 दिनों तक लगातार) जप अभ्यर्थना 2.0 के माध्यम से अखंड जप का आयोजन करवाया गया। अभातेयुप अध्यक्ष पवन मांडोत के नेतृत्व एवं संकल्प शक्ति से इस जप को प्रारंभ किया गया। अध्यक्ष प्रसन्न धोका ने बताया कि तेरापंथ के आद्य प्रवर्तक महामना आचार्य श्री भिक्षु के जन्म त्रिशताब्दी वर्ष एवं तेरापंथ के विकास पुरुष गणाधिपति आचार्य श्री तुलसी के दीक्षा शताब्दी के पावन अवसर पर यह जप की अभ्यर्थना युवाओं एवं किशोरों द्वारा की गई। लगातार 156 घंटे जप में जुड़े 300 से अधिक तेरापंथी युवा व किशोर तेरापंथ समाज के युवा व किशोरों द्वारा जप अभ्यर्थना 2.0 के अंतर्गत 13 दिनों तक अखण्ड जप का क्रम अनवरत संचालित हुआ।

रक्तदान शिविर का आयोजन

साउथ हावड़ा। मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के अंतर्गत अभातेयुप की शाखा तेरापंथ युवक परिषद् साउथ हावड़ा द्वारा स्वेच्छा रक्तदान शिविर का आयोजन हुआ। रक्तदान शिविर का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के संगान से हुआ। परिषद् के अध्यक्ष आदेश चौरड़िया ने उपस्थित सभी का स्वागत अभिनन्दन किया। रक्त दान में कुल 35 यूनिट का रक्त संग्रह हुआ। कार्यक्रम को सफल बनाने में संयोजक निशांत बैद, विनीत लोढ़ा, भरत भंडारी, सुमित बैद सहित कार्यसमिति सदस्य करण गोलछा, अजीत दुगड़, गौरव जैन का विशेष श्रम रहा।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन



जैन विधि-अमूल्य निधि



नूतन प्रतिष्ठान

- **सूरत।** संभूगढ़ निवासी सूरत प्रवासी सुगन चंद डूंगरवाल के सुपुत्र अनिल डूंगरवाल के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक अर्जुन मेड़तवाल, मनीष मालू ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।
- **उदयपुर।** तेरापंथ युवक परिषद् उदयपुर ने सह मंत्री अविनाश बुलिया के अनुज भ्राता राहुल बुलिया के नवीन ऑफिस का पुरोहितों की मादरी उदयपुर में कार्यक्रम की शुरुआत जैन संस्कारक पंकज भंडारी द्वारा 5 बार नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण के साथ शुभारंभ कराया।

नूतन गृह प्रवेश

- **उदयपुर।** मर्यादा नगर उदयपुर में शांतिलाल महेंद्र (महासभा सदस्य) अंकुर सिंघवी के नूतन गृह का शुभारंभ कराया। कार्यक्रम की शुरुआत जैन संस्कारक पंकज भंडारी द्वारा 5 बार नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण के साथ हुई।
- **उदयपुर।** मर्यादा नगर उदयपुर में शांतिलाल महेंद्र (महासभा सदस्य) अंकुर सिंघवी के नूतन गृह का शुभारंभ कराया। कार्यक्रम की शुरुआत जैन संस्कारक पंकज भंडारी द्वारा 5 बार नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण के साथ हुई।

पाणिग्रहण संस्कार

- **गंगाशहर।** सुभाष भुरट के सुपुत्र विनय भुरट का पाणिग्रहण संस्कार अशोक नाहटा की सुपुत्री प्रेक्षा नाहटा के साथ जैन संस्कार विधि से आशीर्वाद भवन गंगाशहर में जैन संस्कारक 'युवक रत्न' राजेन्द्र कुमार सेठिया, धर्मेन्द्र डाकलिया, देवेन्द्र डागा, विपिन बोथरा और विनीत बोथरा ने विवाह संस्कार सानंद संपन्न करवाया।

रंगो के त्योहार होली पर्व पर विशेष आलेख

बसंतऋतु के आगमन से पूर्व होली का पर्व परस्पर मिलन का पर्व

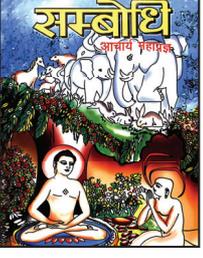
● मुनि चैतन्य कुमार 'अमन' ●

संसार में जितने पर्व मनाए जाते हैं, उनमें से सर्वाधिक पर्व भारत वर्ष में मनाए जाते हैं। चाहे वे लौकिक अथवा लोकोतर। होली, दीवाली, रक्षाबंधन आदि अनेक पर्व हैं, जो लौकिक दृष्टि से मनाए जाते हैं। कुछ पर्व राष्ट्रीय तथा आध्यात्मिक दृष्टि से मनाने की परम्परा रही है। पर्वों की अपनी सार्थकता भी है क्योंकि पर्वों के साथ जुड़ी है- शारीरिक, मानसिक, भावात्मक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण। चार गति चौरासी लाख जीवा योनियों में एक मात्र मानव जीवन है जिसमें पर्व स्तर पर होता है या यों कहा जा सकता है कि मानसिक विकास नहीं के बराबर होता है। अतः ये पर्व विशेष रूप से मानव ही मनाता है। होली का पर्व भी शारीरिक के साथ मानसिक और भावनात्मकता के साथ जोड़ा जा सकता है। यदि मानव पर्वों की आत्मा को पहचानने का पुरुषार्थ करे तो यह बहुत ही महत्वपूर्ण पर्व है।

किन्तु देखा जाता है कि आम आदमी पर्व के अवसर पर रंग-गुलाल आदि रंगों से खेल कर इति श्री कर देता है। जबकि रंग मानव जीवन में अत्यन्त लाभदायक सिद्ध हो सकते हैं। शारीरिक दृष्टि तो रंगों का प्रभाव होता ही है किन्तु मानसिक और आध्यात्मिक पक्ष पर नजर डाले तो यह बहुत उपयोगी सिद्ध होता है। आज चिकित्सा के क्षेत्र में कलर थेरेपी के प्रयोग शारीरिक स्वास्थ्य में लाभकारी सिद्ध हो रहे हैं। मन में उठने वाली तरंगों के साथ जब रंगों को जोड़ दिया जाता है तब उसका प्रभाव कुछ अलग ही होता है। रंगों का प्रभाव ज्ञानी व्यक्तियों के अनुभव और मार्गदर्शन में किया जाना चाहिए। रंगों के प्रयोग से व्यक्ति को शांत अथवा उत्तेजित भी किया जा सकता है। रंगों का होता है अचूक प्रभाव। जीवन को आध्यात्मिकता के साथ जोड़ने वाला सफल जीवन जी सकता है। जैन परम्परा में नमस्कार महामंत्र विभिन्न रंगों पर आधारित है। सद्गुरु के निर्देशन में जब रंगों के साथ

नमस्कार महामंत्र का ध्यान किया जाता है। तो उसका अचिन्त्य लाभ प्राप्त करके संतुष्टि का अनुभव करता है। यद्यपि पर्व एक दिन के लिए आता है किन्तु रंगों का प्रयोग प्रतिदिन किया जा सकता है। पर्वों की महत्ता को समझने वाला ही पर्व की सार्थकता सिद्ध कर सकता है। तथा पर्वों की महत्ता समझने वाला ही जीवन की सार्थकता सिद्ध कर सकता है। पर्व के हर्ष उल्लास की अभिव्यक्ति कैसे करना चाहिए। जीवन में पर्व आते जाते रहेंगे किन्तु विरले व्यक्ति होते हैं जो सही रूप में पर्व का आनंद ले पाते हैं। जैन, बौद्ध, सिख, सनातन, इस्लाम सभी सम्प्रदायों में पर्व मनाने की परम्परा रही है अतः मानवीय चेतना को जागृत करके पर्व को मनाएं तथा उसका यथेष्ट रूप में लाभ लेने का प्रयत्न हो। यह आवश्यक है। होली का पर्व रंगों का पर्व है जिस प्रकार रंग एक दूसरे से मिल जाते हैं वैसे ही मानव-मानव को परस्पर मिलनसार बनने का प्रयास करना चाहिए।

संबोधि

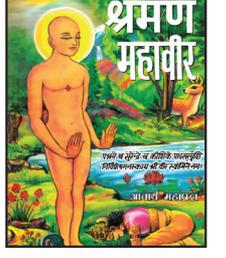


परिशिष्ट



-आचार्यश्री महाप्रज्ञ-

श्रमण महावीर

सह-अस्तित्व और
सापेक्षता

बाहुबलि का इतिहास स्पष्ट है। सब कुछ त्यागकर भी उन्होंने अहं को बचा लिया था। एक वर्ष तक वे प्रतिमा की तरह निश्चेष्ट शांत खड़े रहे। बड़ा दुर्धर्ष तप था। किन्तु अहंकार के कारण वे स्वयं से दूर थे। अहंकार का उपनयन नहीं किया। जैसे ही 'अहं' का भान हुआ और अपने भीतर के इस महान् अविजित शत्रु को देखा तो बाहुबलि को स्वयं पर तरस आया। हाँ! कैसा विचित्र व्यक्ति हूँ मैं! जिसे सबसे पहले छोड़ने का था, मैं पत्थर की तरह उसका भार अब भी ढोये जा रहा हूँ। एक क्षण में सर्प जैसे कंचुकी को छोड़ता है, बाहुबलि उससे मुक्त हो गये। अंधकार आलोक में परिवर्तित हो गया।

'मैं' अहंकार साधना-मार्ग में महान् विघ्न हूँ। महान् साधक स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने कहा है, 'अहंकार का त्याग हुए बिना ईश्वर की कृपा नहीं होती।' ईश्वर के घर के दरवाजे के रास्ते में अहंकार रूपी टूट पड़ा हुआ है। इसे पार किये बिना कमरे में प्रवेश नहीं किया जा सकता। अहंकार है इसलिए ईश्वर के दर्शन नहीं होते। कहीं अहंकार न हो जाए, इसलिए 'मैं' का प्रयोग करना भी एक बार किसी के देखा देखी रामकृष्ण ने बन्द कर दिया था। अहंकार बड़ा सूक्ष्म है। साधक अपनी प्रत्येक लघुतम शारीरिक और मानसिक प्रवृत्ति के प्रति अत्यन्त जागरूक रहे तो उसे अनुभव हो सकता है कि कब कैसे अहंकार उठता है? अहंकार के विसर्जन के लिए उसके प्रति सचेष्ट होना पहला चरण है। 'मैं' (अहं) का विसर्जन विनय होना चाहिए। स्वयं को सब तरह से परमात्मा के अवतरण के लिए खाली कर लेना। अहं के शून्य होने से ही मानसिक, वाचिक और कायिक विनय प्रतिफलित हो सकता है। व्यक्ति का रूपान्तरण अन्यथा असंभव है। बाहर से व्यक्ति बड़ा विनम्र बनता है, झुकता है, किन्तु भीतर अहं 'मैं' अकड़ा रहता है। महावीर कहते हैं-'अहंकार को जीते बिना व्यक्ति मृदु-विनम्र नहीं बन सकता।' विनम्रता का अर्थ है-अहं-मैं का मिट जाना, शून्य हो जाना। आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने लिखा है-विनय का वास्तविक अर्थ है-अपने आपको बिल्कुल खाली कर देना, अहं से मुक्त कर देना, केवल अपने स्वरूप की स्थिति में चले जाना, बाहर से जो कुछ भरा हुआ है, उससे मुक्त हो जाना। इतना रेचन करना पड़ता है कि मन खाली हो जाये। विनय की सारी प्रक्रिया रेचन की प्रक्रिया है। विनय में कषाय का विवेक होता है। विवेक का अर्थ है-पृथक् करना। पृथक् करने का अर्थ है-रेचन करना, निकालना। इसी का नाम है 'विनयनम्'। जब तक आदमी खाली नहीं होता तब तक विनय के द्वारा जो समाधि प्राप्त होनी है वह नहीं होती। विनय की चार अपेक्षाएँ हैं-

१. गुरु के अनुशासन को सुनना।
२. गुरु जो कहता है उसे स्वीकार करना।
३. गुरु के वचन की आराधना करना।
४. अपने मन को आग्रह से मुक्त करना।

(क्रमशः)

४. स्कंदक परिव्राजक श्रावस्ती में रहता था। भगवान् कयंजला में पधारे। वह भगवान् के पास आया। भगवान् ने कहा- 'स्कंदक! तुम्हारे मन में जिज्ञासा है कि लोक सान्त है या अनन्त?' 'भंते! है। मैं इसकी व्याख्या चाहता हूँ।'

'मैं' इसका सापेक्ष दृष्टि से व्याख्या करता हूँ। उसके अनुसार लोक सान्त भी है और अनन्त भी है।'

'भंते! यह कैसे?'

'लोक एक है, इसलिए संख्या की दृष्टि से वह सान्त है। लोक असंख्य आकाश में फैला हुआ है, इसलिए क्षेत्र की दृष्टि से वह अनन्त है। लोक था, है और होगा, इसलिए काल की दृष्टि से वह अनन्त है। लोक वर्ण, गंध, रस और स्पर्श के पर्यायों से युक्त है, इसलिए पर्याय की दृष्टि से वह अनन्त है।'

अविरोध में विरोध देखने वाला एक चक्षु होता है और विरोध में अविरोध देखने वाला अनन्त चक्षु। भगवान् महावीर ने अनन्त चक्षु होकर सत्य को देखा और उसे रूपायित किया।

सतत जागरण

अनुरक्ति की आंख से गुण दिखता है। विरक्ति की आंख से दोष दिखता है। मध्यस्थता की आंख से गुण और दोष-दोनों दिखते हैं। भगवान् महावीर की साधना अनुराग और विराग के अंचलों से अतीत थी। वे जागृति के उस बिन्दु पर पहुंच गए थे कि जहां पहुंचने पर कोई व्यक्ति प्रिय या अप्रिय नहीं रहता। वहां वांछनीय होता है व्यक्ति का जागृत होना और अवांछनीय होता है व्यक्ति का मूर्च्छित होना। भगवान् का संयम है जागरण। भगवान् की साधना है जागरण। भगवान् का ध्यान है जागरण।

भगवान् ईश्वर नहीं थे। वे वैसे ही शरीरधारी मनुष्य थे जैसे उस युग के दूसरे मनुष्य थे। वे किसी के भाग्य-निर्माता नहीं थे। न उनमें सृष्टि के सर्जन और प्रलय की शक्ति थी। वे करने, नहीं करने और अन्यथा करने में समर्थ ईश्वर नहीं थे। वे किसी ईश्वरीय सत्ता के प्रति नत-मस्तक नहीं थे, जो मनुष्य के भाग्य की डोर अपने हाथ में थामे हुए हो, उनका ईश्वर मनुष्य से भिन्न नहीं था। उनका ईश्वर आत्मा से भिन्न नहीं था। हर आत्मा उनका परमात्मा है। हर आत्मा उनका ईश्वर है।

आत्मा की विस्मृति होना प्रमाद है, निद्रा है। आत्मा की स्मृति होना अप्रमाद है, जागरण है। आत्मा की सतत स्मृति होना परमात्मा होना है, ईश्वर होना है।

भगवान् महावीर ने आत्मा को परमात्मा होने की दिशा दी, ईश्वर होने के रहस्य का उद्घाटन किया। यह उनकी बहुत बड़ी देन है। भगवान् स्वयं सतत जागरूक रहे, दूसरों की जागृति का समर्थन और मूर्च्छा का विखंडन करते रहे। उनकी वह प्रक्रिया सब पर समान रूप से चलती रही।

गौतम भगवान् के प्रथम शिष्य थे। भगवान् की अनेकान्त-दृष्टि के महान् प्रवक्ता और महान् भाष्यकार। एक दिन उन्हें पता चला कि उपासक आनन्द समाधि-मरण की आराधना कर रहा है। वे आनन्द के उपासना-गृह में गए। आनन्द ने उनका अभिवादन किया। धर्मचर्चा के प्रसंग में आनन्द ने कहा- 'भंते! भगवान् महावीर द्वारा प्रतिपादित अप्रमाद की साधना से मुझे विशाल अवधिज्ञान (प्रत्यक्ष ज्ञान) प्राप्त हुआ है।'

गौतम बोले- 'आनन्द! गृहस्थ को प्रत्यक्ष ज्ञान हो सकता है पर इतना विशाल नहीं हो सकता। तुम कहते हो कि इतना विशाल प्रत्यक्ष ज्ञान हुआ है, इसके लिए तुम प्रायश्चित्त करो।'

'भंते! क्या भगवान् ने सत्य बात कहने वाले के लिए प्रायश्चित्त का विधान किया है?'

'नहीं, सर्वथा नहीं।'

'भंते! यदि भगवान् ने सत्य बात कहने वाले के लिए प्रायश्चित्त का विधान नहीं किया है तो आप ही प्रायश्चित्त करें।'

आनन्द की यह बात सुन गौतम के मन में संदेह उत्पन्न हो गया। वे वहां से प्रस्थान कर भगवान् महावीर के पास गए। सारी घटना भगवान् के सामने रखकर पूछा- 'भंते! प्रायश्चित्त आनन्द को करना होगा या मुझे ?'

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

आचार्यश्री रायचंद जी युग

साध्वीश्री मनांजी(मैनांजी-मीनांजी) (माधोपुर) दीक्षा क्रमांक 235

साध्वीश्री तपस्विनी थी। आपके तप की तालिका इस प्रकार है- बेले/25, 3/2, 4/40, 5/3, 6/3, 7/1, 8/1, 9/4, 10/1, 15/2, 16/4, 17/1, 18/1, 30/1 इसके अतिरिक्त अढाई सौ प्रत्याख्यान तथा अनेक वर्षों तक दस प्रत्याख्यान किए। शीतकाल में बहुत वर्षों तक शीत सहा।

- साभार : शासन समुद्र -

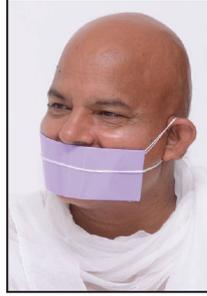
धर्म है उत्कृष्ट मंगल



धर्म है
उत्कृष्ट मंगल

आचार्य महाश्रमण

-आचार्यश्री महाश्रमण
चौबीसी : आगम के
आलोक में



इसका आगमिक आधार है-

जहा य किंपागफला मणोरमा,
रसेण वण्णेण य भुज्जमाणा।
ते खुडुए जीविय पच्चमाणा
एओवमा काम गुणा विवागे।।

जैसे किंपाक फल खाने के समय रस और वर्ण से मनोरम होते हैं और परिपाक के समय जीवन का अन्त कर देते हैं। कामगुण भी विपाक-काल में ऐसे ही होते हैं।

उत्तराध्ययन ३२/२०

जहा किंपाग फलाणं, परिणामो न सुन्दरो।
एवं भुत्ताण भोगाण, परिणामो न सुन्दरो ।।

जिस प्रकार किंपाक फल खाने का परिणाम सुन्दर नहीं होता, उसी प्रकार भोगे हुए भोगों का परिणाम भी सुन्दर नहीं होता।

उत्तराध्ययन १६/१७

अध्यात्म साधना के क्षेत्र में ब्रह्मचर्य की साधना का बहुत मूल्य है। यह जीवन की बहुत बड़ी सम्पत्ति है। निर्मल ब्रह्मचर्य पालने वालों को देव आदि भी नमस्कार करते हैं। उत्तराध्ययन सूत्र में कहा गया है-

देव दाणव गंधव्वा, जक्ख-रक्खस-किन्नरा।
बंभयारिं नमंसति, दुक्करं जे करंति तं ।।

उस को देव, दानव, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस, और किन्नर-ये सभी नमस्कार करते हैं, जो दुष्कर ब्रह्मचर्य का पालन करता है।

उत्तराध्ययन १६/१६

ब्रह्मचर्य की सुरक्षा के लिए आगमों में 'नवबाइ' का भी विधान है। चौबीसी में ब्रह्मचर्य-शुद्धि के लिए बार-बार सचेत किया गया है-

अहो प्रभु! रमणी राखसणी कही,
विषबेली मोह जाल हो। २/४

त्रीयादिक नां संग ते, आलंबन दुख दातार रे। ११/६
वनिता जाणी वेतरणी, शिव सुन्दर वरवा हूस घणी। १२/२
स्त्री स्नेह पासा दुर्दन्ता, कह्या नरक निगोद तणां पंथा १२/५

मूल आगम में इस प्रकार पाठ मिलता है-

नो रक्खसीसु गिज्जेज्जा, गंडवच्छासुऽण्णेगचित्तासु ।

मुनि वक्ष (स्तनों) में ग्रंथि वाली, अनेक चित्त वाली तथा राक्षसी की भांति भयावह स्त्रियों में आसक्त न बने! - उत्तराध्ययन ८/१८

चौबीसी में २४ तीर्थकरों की स्तुति है। इसका मूल आधार उक्कित्तणं (लोगस्स उज्जोयगरे') - 'लोगस्स' का पाठ है जिसमें चौबीस तीर्थकरों का स्तवन है। इसे चउवीसत्थव (चतुर्विंशतिस्तव) भी कहा जाता है।

चौबीसवें गीत में कहा गया है-

निंदा नै स्तुति समपणै रे, मान अनै अपमान ।

इसका आगमिक आधार है-

लाभालाभे सुहे दुक्खे, जीविए मरणे तथा।
समो निंदा पसंसासु, तथा माणावमाणओ।।

मुनि लाभ-अलाभ, सुख-दुःख, जीवन-मरण, निन्दा-प्रशंसा और मान-अपमान इन सभी द्वन्द्वात्मक स्थितियों में सम रहे।

चौबीसी में निहित अनेक तथ्यों का आधार हमें आगम-साहित्य में मिलता है। इस प्रकार चौबीसी का आगम के आलोक में अवलोकन किया जाए तो हमें पता चलेगा कि यह ग्रन्थ स्तुति-मात्र नहीं, आगमिक ज्ञान प्रदान करने वाला भी है। प्रस्तुत निबन्ध तो उसका एक निदर्शन मात्र है।

(क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र



तेरापंथ टाइम्स

की प्रति पाने के लिए क्यूआर
कोड स्कैन करें या आवेदन करें
<https://abtyp.org/prakashan>

समाचार प्रकाशन हेतु

abtyp@abtyp.org पर ई-मेल अथवा
8905995002 पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

मार्च 2026

सप्ताह के विशेष दिन

11 मार्च

भगवान
ऋषभ जन्म
कल्याणक

12 मार्च

भगवान
ऋषभ दीक्षा
कल्याणक

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

समाचार प्रेषकों से निवेदन

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र 'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स' में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. कृपया किसी भी न्यूज पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
4. समाचार मोबाइल नं. 8905995002 पर व्हाट्सअप अथवा abtyptt@gmail.com पर ई-मेल के माध्यम से भेजें।

समाचार पत्र ऑनलाइन पढ़ने के लिए
नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें।<https://terapanthtimes.org/>

:: निवेदक ::



अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का
हुआ आयोजन

कोन्ननगर, रिसड़ा।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा 3 के सान्निध्य में तथा तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में कोन्ननगर व रिसड़ा सभा भवन में प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन हुआ। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमारजी ने कहा, ध्यान प्रकाश की ज्योति की साधना है। ध्यान परिवर्तन की प्रक्रिया है। शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक शांति, भावनात्मक संतुलन की त्रिवेणी है। ध्यान से वृत्तियों का परिष्कार होता है। मुनि ने आगे कहा-धर्म आत्म साधना का उपयोगी तत्व है। धर्म का परिणाम ही क्रांति और शांति है। वही धर्म श्रेष्ठ होता है जिसमें परिवर्तन होता है और शांति मिलती

है। धर्म का एक भेद ध्यान है। ध्यान आभ्यन्तर तप है। ध्यान से निर्विचारता, निर्विकारता, निर्विकल्पता का विकास होता है। ध्यान का अर्थ है राग द्वेष से दूर होना, वीतरागता का अनुभव करना। जहां राग, द्वेष है वह ध्यान नहीं होता है। ध्यान का उद्देश्य है चित्त की शुद्धि और मानसिक प्रसन्नता, ज्ञाता तुल्य भाव के साथ आत्मा को देखना। अपने दोषों को देखना। प्रेक्षा ध्यान आचार्यश्री महाश्रमण जी के उर्वरा मस्तिष्क की देन है। आचार्यश्री तुलसी के सान्निध्य में आचार्य महाश्रमणजी ने वर्षों तक ध्यान साधना के नाना प्रयोग किए। नवनीत के रूप में प्रेक्षाध्यान प्राप्त हुआ। प्रेक्षाध्यान की साधना आध्यात्मिकता वैज्ञानिकता से अनुप्राणित है। मुनिजी ने प्रेक्षाध्यान व अनुप्रेक्षा के प्रयोग कराए।

तप अभिनंदन कार्यक्रम का आयोजन

बीकानेर, गंगाशहर।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा गंगाशहर के तत्वावधान में रविवार को बोथरा भवन में एक विशेष 'तप अभिनंदन' कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह समारोह मुनि अमृत कुमार जी के पावन सान्निध्य में युवा तपस्वी अरिहंत पुगलिया द्वारा की गई 15 दिवसीय कठिन तपस्या (15 उपवास) की पूर्णाहुति के उपलक्ष्य में रखा गया।

अरिहंत पुगलिया ने मात्र 27 वर्ष की अल्पायु में 15 दिनों तक निराहार रहकर 32 भक्त प्रत्याख्यान (आगमिक तप) किया, जिसे समाज के लिए एक महान आध्यात्मिक उपलब्धि माना जा रहा है। कार्यक्रम में उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए मुनि अमृत कुमार जी ने तप के महत्व पर प्रकाश डाला। प्रेरणादायी युवा: मुनि श्री ने कहा कि उच्च मनोबल के बिना ऐसी कठिन तपस्या संभव नहीं है। आज के दौर में जब युवा भौतिकवाद की ओर भाग रहे हैं, अरिहंत

जैसे युवाओं का धर्म और तप की ओर झुकना पूरे समाज के लिए गौरव की बात है। तप और स्वास्थ्य: उन्होंने बताया कि नियमित तपस्या, नवकारसी और रात्रि भोजन का त्याग न केवल कर्मों की निर्जरा करता है, बल्कि शरीर को बड़ी बीमारियों से मुक्त कर स्वस्थ भी रखता है। मुनि वृद्धों ने तपस्या के साथ-साथ व्यावहारिक जीवन में अहिंसा के पालन पर जोर दिया।

कार्यक्रम में मुनि प्रबोध कुमार जी ने तपस्वी जनों से कहा कि तपस्या में वाहनों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। अनावश्यक पापों से बचने का प्रयास करना चाहिए। तपस्या के साथ जप और ध्यान का प्रयोग करना चाहिए। मुनि श्री ने वायुकाय के जीवों की हिंसा से बचने की प्रेरणा प्रदान की। तप अभिनंदन के कार्यक्रम में बोलते हुए मुनि श्री उपशम कुमार जी ने कहा कि असंयमित भोजन बीमारियों की जड़ है। बेमेल भोजन करने से भी अनेक बीमारियां उत्पन्न हो जाती हैं। मुनि श्री ने प्रति माह एक उपवास करने व रात्रि भोजन का त्याग करने की प्रेरणा प्रदान की।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा गंगाशहर के तत्वावधान में रविवार को बोथरा भवन में एक विशेष 'तप अभिनंदन' कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह समारोह मुनि अमृत कुमार जी के पावन सान्निध्य में युवा तपस्वी अरिहंत पुगलिया द्वारा की गई 15 दिवसीय कठिन तपस्या (15 उपवास) की पूर्णाहुति के उपलक्ष्य में रखा गया। अरिहंत पुगलिया ने मात्र 27 वर्ष की अल्पायु में 15 दिनों तक निराहार रहकर 32 भक्त प्रत्याख्यान (आगमिक तप) किया, जिसे समाज के लिए एक महान आध्यात्मिक उपलब्धि माना जा रहा है। कार्यक्रम में उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए मुनि अमृत कुमार जी ने तप के महत्व पर प्रकाश डाला। प्रेरणादायी युवा: मुनि श्री ने कहा कि उच्च मनोबल के बिना ऐसी कठिन तपस्या संभव नहीं है।

आज के दौर में जब युवा भौतिकवाद की ओर भाग रहे हैं, अरिहंत जैसे युवाओं का धर्म और तप की ओर झुकना पूरे समाज के लिए गौरव की बात है।

“संघ सम्मान मांगता है” कार्यशाला का आयोजन

टी दासरहल्ली।

डॉ मुनि श्री पुलकित कुमार जी के सान्निध्य में “संघ सम्मान मांगता है” विषय पर तेरापंथ सभा भवन में कार्यशाला का आयोजन किया गया। मुनिश्री ने उद्बोधन में कहा की तेरापंथ धर्म संघ में निष्काम भाव से सेवा पर बल दिया जाता है। सेवा देने वाला ही मेवा पाता है। धर्म संघ के प्रति सम्मान, आदर भाव एवं श्रद्धा समर्पण रखना ही उसका असली सम्मान होता है। मुनिश्री ने आगे कहा वर्तमान समय में संघम् शरणम

गच्छामि उत्तम वाक्य है। धर्म संघ के सम्मान के लिए माला पहनाना ही पर्याप्त नहीं है उसके प्रति कर्तव्य भाव को बढ़ाना चाहिए। मुनिश्री ने युवा पीढ़ी को आह्वान करते हुए कहा तेरापंथ संघ की युवा पीढ़ी दायित्व शील बनें। सेवा भावी एवं समर्पित हो यह आवश्यक है। नचिकेता मुनि आदित्य कुमारजी ने संघ करता है उन्हें प्रणाम गीत के माध्यम से प्रेरणा दी। महिला मंडल बहनों ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। सभाध्यक्ष भगवतीलाल मांडोत से स्वागत किया, मुख्य वक्ता तेरापंथ महासभा के दक्षिणांचल एवं मलनाड

प्रभारी, उपासक महेंद्र दक ने कहा अपने पूर्वजों से हमें संघ सेवा की प्रेरणा लेनी चाहिए। जहां गुरु की एवं धर्म संघ की अवहेलना होती है उस प्रक्रिया में श्रावक भाग न लें।

आचार्य श्री तुलसी महाप्रज्ञ सेवा केंद्र के अध्यक्ष ललित मांडोत, विजयनगर से सभाध्यक्ष मंगल कोचर, आदि ने विचार व्यक्त किए। गांधीनगर तेरापंथ ट्रस्ट के पूर्वाध्यक्ष प्रकाश बाबेल, अणुव्रत समिति अध्यक्ष ललित बाबेल की उपस्थिति रही, कार्यक्रम का संचालन एवं आभार ज्ञापन मंत्री प्रवीण बोहरा ने किया।

'बच्चों की शिक्षा' जन जागरण हेतु वाँकथान का आयोजन

चेन्नई।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, चेन्नई चेंप्टर द्वारा 'बच्चों की शिक्षा' विषयक जन - जागरण एवं सहयोग के उद्देश्य से रविवार प्रातः एक सुव्यवस्थित वाँकथान एवं ट्रेजर हंट का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में 90 प्रतिभागियों ने पंजीकरण कर सक्रिय सहभागिता निभाई। कार्यक्रम का संचालन टीपीएफ के सचिव गौरव सुराना ने किया। अध्यक्ष प्रमिला जैन ने स्वागत भाषण में आयोजन के सामाजिक उद्देश्य, शिक्षा के महत्व तथा

समाज में जागरूकता की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। मुख्य अतिथि सुंदर अलेक्जेंडर- मॉडल एवं मिस्टर इंडिया 2024 का परिचय अमन बोहरा ने प्रस्तुत किया। अपने संक्षिप्त प्रेरक संबोधन में मुख्य अतिथि ने कहा कि 'फिटनेस और सामाजिक उत्तरदायित्व का यह समन्वय सराहनीय है तथा शिक्षा के क्षेत्र में ऐसे प्रयास समाज के लिए प्रेरणादायक हैं।'

मुख्य अतिथि का सम्मान टीपीएफ राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्य सदस्य कमलेश नाहर एवं दिनेश थोका, तेरापंथ सभा अध्यक्ष अशोक खतंग, टीपीएफ

चेन्नई की अध्यक्ष प्रमिला जैन द्वारा किया गया।

आयोजन संयोजक अमन बोहरा एवं श्री हर्ष गादिया ने प्रतिभागियों के लिए उत्साहवर्धक जुम्बा सत्र आयोजित कर वातावरण को ऊर्जावान बनाया। प्रतिभागियों ने लगभग 2 किलोमीटर के निर्धारित क्षेत्र में विभिन्न सुरागों को हल करते हुए एवं समूह गतिविधियों में भाग लेते हुए कार्यक्रम को सफल बनाया। प्रतिभागियों द्वारा धारण किए गए बिम्ब पर शिक्षा-संदेश अंकित थे, जिससे आयोजन का उद्देश्य स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुआ।

तेरापंथ-मेरापंथ कार्यशाला का आयोजन

रिसड़ा।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनिश्री जिनेशकुमार जी ठाणा 3 के सान्निध्य में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के निर्देशन में तेरापंथ : मेरापंथ कार्यशाला का आयोजन रिसड़ा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा द्वारा रिसड़ा सेवक संघ के हॉल में आयोजित किया गया। कार्यशाला में प्रशिक्षक उपासक सुशील सामसुखा थे, इस अवसर पर उपस्थित धर्म सभा को संबोधित करे हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा- हम चेतन है परन्तु हमारी चेतना पूर्ण विकास की स्थिति में नहीं है। वह अनन्ता अनंत काल से पूर्वार्जित कर्मों का तथा संस्कारों से आवृत्त है। उन्हें अनावृत्त करना है। आवृत्त से अनावृत्त की ओर सतत गति का नाम ही विश्वास है। विकास भौतिक

व आध्यात्मिक दोनों होता है। प्रत्येक व्यक्ति विकास चाहता है। जो व्यक्ति बुरा सोचता है, बुरा करता है उसका अनिष्ट संभव है जो व्यक्ति अच्छा सोचता है अच्छा बोलता है और अच्छी सत प्रवृत्ति करता है उसका - का इष्ट संभव है। व्यक्ति ईर्ष्या से मुक्त बने, अच्छा सोचे। मुनि ने आगे कहा विकास का दूसरा सूत्र है। वचन की मधुरता। जो व्यक्ति मधुर बोलता है असंभव लगने वाला कार्य भी संभव हो जाता है। व्यक्ति मधुर बोले। मधुर बोलने वाला सबका प्रिय हो जाता है। आचार्य भिक्षु का मन भी पार्वत्र था और वचन भी प्रिय थे। उनके अनुशासन में भी हित था। विकास का तीसरा सूत्र है विचारों में शालीनता। विचार हमेशा पवित्र हो, सकारात्मक हो विचारों में संकीर्णता न हो। आचार्य भिक्षु के विचारों में अनाग्रह भाव था। विकास का चौथा

तथ्य है आचारकी निर्मलता। आचरण सम्यग होना चाहिए। तेरापंथ मेरापंथ कार्यशाला सब के लिए कल्याणकारी हो। मुनिश्री परमानंद जी ने कहा मानवता के चार आधार स्तंभ हैं। प्रेम, न्याय, विश्वास, श्राम। मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। स्वागत भाषण रिसड़ा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष प्रदीप मुणोत ने दिया। कार्यशाला के प्रशिक्षक उपासक सुशील बाफना ने कार्यशाला के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किये।

अणुव्रत समिति, कोलकाता के अध्यक्ष नवी दुगड़ व सदस्यों ने ईको फ्रेंडली होली का बैनर अनावरण करते हुए ईको फ्रेंडली होली की जानकारी प्रदान की। आभार ज्ञापन सभा के मंत्री प्रकाश भंसाली ने किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद ने किया।

आध्यात्मिक मिलन समारोह

चेन्नई।

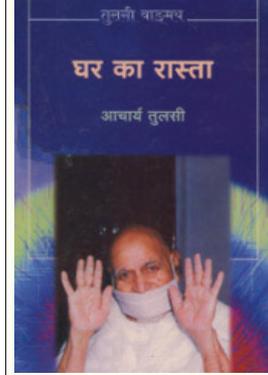
तेरापंथ धर्मसंघ की विदुषी साध्वी सौमयशा जी आदि ठाणा 3 का पदार्पण प्रकाश चंद मुथा के निवास स्थान से ओम रोड, किलपाँक क्षेत्र में स्थित पुखराज बडोला के गेस्ट हाउस मधुवन में प्रवेश हुआ। जहां पर धर्म संघ की विदुषी साध्वी उदितयशाजी आदि ठाणा 4 विराज रहे हैं। दोनों सिंघाड़े का आध्यात्मिक मिलन ओमस रोड पर होने के पश्चात समारोह शांतिलाल कोठारी के निवास स्थान पर रखा गया। साध्वी उदितयशाजी आदि

ठाणा 4, साध्वी सौमयशा जी आदि ठाणा 3 के सम्मुख स्वागतार्थ पधारी और चरणों में वंदन करते हुए हर्ष विभोर हो गए। साध्वी संगीतप्रभाजी के मधुर वाणी एवं मधुर धुन से कार्यक्रम को आगे बढ़ाया। साध्वी भव्ययशा जी ने मंच संचालन का कार्य संभाला। चेन्नई सभा अध्यक्ष अशोक खतंग ने स्वागत स्वर पेश किया। विमल चिप्पड़ ने साहूकारपेट ट्रस्ट बोर्ड की ओर से अपनी भावना व्यक्त करते हुए साहूकारपेट पधारकर अधिक समय तक विराजने की अर्ज की। साध्वी सरल प्रभाजी, साध्वी ऋषि प्रभाजी ने

अपने ओजस्वी भाषा में अपना व्यक्तव्य पेश किया। साध्वी संगीत प्रभाजी, साध्वी भव्यायशाजी, साध्वी शिक्षा प्रभाजी ने गीतिका पेश की। साध्वी उदितयशाजी ने अपनी विलक्षण शैली में स्वागत स्वर पेश करते हुए तेरापंथ धर्मसंघ की महिमा को और पुष्ट करने का लक्ष्य रहे। साध्वी सौमयशा जी ने अपने प्रवचन में गुरुदेव की असीम कृपा से धर्म संघ आगे बढ़ रहा है। चेन्नई वासियों ने और विराजने की कृपा कराए ऐसी अर्ज की। विकास सेठिया ने आभार ज्ञापन करते हुए अपनी बात की विस्तृत जानकारी पेश की।

बोलती किताब

घर का रास्ता



आचार्य तुलसी केवल एक धार्मिक अग्रदूत नहीं थे, वे युगद्रष्टा और युगस्रष्टा दोनों रूपों में उभरे। उन्होंने समय की नब्ज को पहचाना, समाज के विचार-तंतुओं को समझा और नवयुग के निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया। नैतिकता और अध्यात्म की दो प्रमुख धाराओं को उन्होंने अपनी तेजस्वी चेतना से आलोकित किया। उनके चिंतन में व्यक्ति और समाज दोनों के लिए परिवर्तन की स्पष्ट दिशा थी।

ब्रज्याचार्य तुलसी एक महान परिव्राजक और विलक्षण प्रवचनकार थे। प्रवास और संवाद द्वारा उन्होंने जनमानस से सीधा संबंध स्थापित किया। साठ वर्षों से अधिक काल तक, प्रतिदिन कई बार दिए गए प्रवचनों ने एक विराट वाङ्मय को जन्म दिया। यह केवल शब्दों की श्रृंखला नहीं, बल्कि अनुभव और चेतना का प्रवाह है, जो आज भी आत्मिक जागरण के प्रेरक स्रोत के रूप में विद्यमान है।

उनकी वाणी क्रांतिकारी थी— रूढ़ियों को चुनौती देने वाली, जड़ता को झकझोरने वाली। उन्होंने संयम, मूल्यों और आचार को जीवन का वास्तविक धन बताया। अर्थप्रधान जीवन-दृष्टि के दुष्परिणामों को उन्होंने समाज के सामने रखा और संयम-केंद्रित जीवनदर्शन का आह्वान किया। उनकी सिद्धवाणी का प्रत्येक वाक्य शिक्षा-पद है, जो मानवता को नई दृष्टि प्रदान करता है।

आज “प्रवचन पाथेय ग्रंथमाला” के रूप में उनके प्रवचनों का संकलन, संपादन और प्रकाशन होने जा रहा है। मुनि धर्मरुचि के अथक प्रयासों और अनेक साधकों के योगदान से यह महत्वपूर्ण वाङ्मय-पुंज पाठकों तक पहुंच रहा है। यह संग्रह केवल प्रवचनों का संकलन नहीं, बल्कि युग की चेतना का दस्तावेज है। आचार्य तुलसी के विचारों, चिंतन और सिद्धवाणी को जन-जन तक पहुंचाना आज हमारे समय का धर्म है।

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :

आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती

+91 87420 04849 / 04949 <https://books.jvbharati.org> books@jvbharati.org

पृष्ठ 1 का शेष

सम्यक् ज्ञान और...

मंगल प्रवचन के उपरान्त पूज्य प्रवर ने साधु-साध्वियों को जिज्ञासाएं प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया और उनका समाधान प्रदान किया।

आचार्य प्रवर की मंगल सन्निधि में आज अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड का सम्मान समारोह आयोजित किया गया। विश्व कैसर जागरूकता दिवस के अवसर पर अभतममं. ने अपनी 309 शाखाओं के माध्यम से 17200 पैप स्मीयर टेस्ट कराया जो एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में दर्ज हुआ। इस संदर्भ में तेममं लाडनू व अभातेममं की अध्यक्ष सुमन नाहटा ने अपनी अभिव्यक्ति दी।

एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड के अधिकृत प्रतिनिधि संजय फूला ने भी अपनी भावाभिव्यक्ति दी। उन्होंने इस रिकॉर्ड से संबंधित सर्टिफिकेट व मेडल अभातेममं के पदाधिकारियों को प्रदान किया। आचार्यश्री ने इस संदर्भ में मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

व्यवहार में निक्षेप की...

वस्तु को जानने के लिए नाम निक्षेप की कितनी महत्ता होती है? इसी प्रकार किसी आकृति, फोटो इत्यादि को देखने मात्र से उसका नाम आदि ध्यान में आ जाता है। इस प्रकार मूल चीज के भाव की भूत भावी अनुपयोगी पर्याय को जानना द्रव्य निक्षेप है, इसके द्वारा भी हम

ज्ञान कर सकते हैं और वास्तव में उस स्थिति को प्राप्त कर लेना भाव निक्षेप है। ये हमारे व्यवहार के महत्त्वपूर्ण आयाम हैं, जिनके बिना हमारा व्यवहार चलना बहुत मुश्किल हो सकता है। व्यवहार में निक्षेप का बहुत बड़ा हाथ होता है। यह कहा जा सकता है कि वस्तु बोध की दृष्टि ही निक्षेप है। आज भी पूज्य प्रवर ने चिंतन हेतु साधु-साध्वियों, समणियों को विषय प्रदान किये। तत्पश्चात् चारित्रात्माओं को जिज्ञासा हेतु अवसर प्रदान किया और उनका समाधान प्रदान किया। पूज्य प्रवर द्वारा चलाया जा रहा यह क्रम चारित्रात्माओं के अतिरिक्त अन्य सब लोगों के लिए भी ज्ञान वर्धक सिद्ध हो रहा है।

पृष्ठ 12 का शेष

अहिंसा, संयम और...

इस योगक्षेम वर्ष की कालावधि के समय तक ज्ञानात्मक दृष्टि से बहिर्विहार में रहने वाले साधु-साध्वियों भी यदि ठिकाणे में सहज रूप में यू-ट्यूब आदि के माध्यम से प्रसारण हो रहा है तो उसे देख सकते हैं। इसके लिए अनापत्ति है।

इस दौरान चलने वाले शिक्षण-प्रशिक्षण के बाद परीक्षा के पश्चात् ही कोई उपाधि या डिग्री प्रदान की जाए। हमारे अष्टम आचार्यश्री कालूगणी का जन्म दिवस है। आज का दिन अणुव्रत, पारमार्थिक शिक्षण संस्था से जुड़ा हुआ है। यह वर्ष धर्म संघ को ऊँचाई प्रदान

करने वाला सिद्ध हो।

मंगल प्रवचन पश्चात् आचार्य प्रवर ने उपस्थित चारित्रात्मकों को अपनी जिज्ञासाएं प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया। इसके बाद तत्त्व ज्ञान के विद्यार्थियों, प्रेक्षाध्याय के शिविद्यार्थियों को मंगल पाथेय प्रदान किया। तत्पश्चात् आचार्यश्री के ‘ठाणं’ प्रवचन के आधार पर जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित पुस्तक ‘आठ बातें ज्ञान की’ को आचार्य प्रवर के समक्ष लोकार्पित किया गया। मुमुक्षु बहिनों ने गीत का संगान किया। राकेश मणि ने संस्कृत भाषा में अभिव्यक्ति दी। तेरापंथ समाज छापर ने गीत का संगान किया।

योगक्षेम वर्ष में 32 आगम के स्वाध्याय का लक्ष्य रहे : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनू।

17 फरवरी, 2026

लाडनू की पुण्य धरा पर आयोजित होने वाले योगक्षेम वर्ष की पृष्ठभूमि के रूप में त्रिदिवसीय अनुष्ठान गतिमान है। इस अनुष्ठान के द्वितीय दिवस जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान अधिशास्ता, तीर्थंकर के प्रतिनिधि, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने चतुर्विध धर्मसंघ के साथ जप अनुष्ठान का प्रयोग करवाया। तत्पश्चात् आर्हत वांगमय के माध्यम से महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अपनी पावन देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ की परंपरा में 32 आगम सम्मत हैं, जिनमें 11 अंग, 12 उपांग, 4 मूल, 4 छेद और 1 आवश्यक हैं। ये बत्तीस आगम हमारे यहां प्रमाण के रूप में मान्य किए गए हैं। ग्यारह अंग तो स्वतः प्रमाण है, इसके साथ ही अन्य आगम भी हमारे लिए प्रमाण भूत शास्त्र हैं।

इस आगम बत्तीसी का साधु-साध्वियां, समणियां स्वाध्याय करते हैं, परायण करते हैं। हमारे यहां सभी बत्तीस आगमों का मूल पाठ उपलब्ध है, प्रकाशित है। इनमें से कई आगम सानुवाद और सटिप्पण प्रकाशित हो चुके हैं। कोई केवल मूल पाठ ही स्वाधीत करना चाहे तो वह भी एक स्वाध्याय का तरीका हो सकता है और मूल पाठ को



पढ़ने से ही प्रायः प्रायः अर्थ समझ में आ जाए तो यह भी एक अच्छी गति है। यद्यपि अनुवाद भी महत्वपूर्ण है। और भी अच्छा विकास यह हो सकता है कि मूल पाठ को पढ़कर अनुवाद की त्रुटि को भी पकड़ लिया जाए।

परम पूज्य गुरुदेव तुलसी के समय आगम संपादन का कार्य प्रारंभ हुआ। गुरुदेव तुलसी की यह दृष्टि रही कि आगम का अनुवाद निष्पक्षता के साथ होना चाहिए। यदि तटस्थता पूर्ण अनुवाद होता है, वह बहुत अच्छा होता है। आगम संपादन के कार्य में आचार्यश्री महाश्रमणजी जुड़े और वे तो मानो आगम कार्य के प्रति

समर्पित हो गए। योगक्षेम वर्ष का समय सामने हैं। साधु-साध्वियों और समणियों के न्यारा में रहने पर गोचरी, क्षेत्र संभाल आदि अनेक कार्य होते हैं परन्तु यहां अन्य कार्यों में समय लगाने की अपेक्षा नहीं है तो इस लम्बे समय का उपयोग आगम स्वाध्याय के रूप में किया जाना चाहिए।

इन बारह महीनों के समय में यदि कई आगम स्वाधीत हो जाएं तो बहुत अच्छी बात हो सकती है, साथ में कुछ नोट्स भी बना लिए जाएं तो व्याख्यान आदि की भी अच्छी सामग्री तैयार हो सकती है।

इस प्रकार योगक्षेम वर्ष के समय का अपने-अपने ढंग से अच्छा उपयोग करना चाहिए। आगम के अतिरिक्त अन्य साहित्य का काम भी किया जा सकता है। गुरुदेव तुलसी के समय शुरू हुए आगम संपादन का कार्य भी यदि कुछ वर्षों में पूर्णता को प्राप्त हो जाए तो यह कितनी बड़ी बात हो सकती है।

अनेक साधु-साध्वियों और समणियों को जो अलग-अलग कार्य सौंपे हुए हैं, योगक्षेम वर्ष की अवधि में उन कार्यों को पूर्ण करने का प्रयास किया जा सकता है। इसी प्रकार जो साधु-साध्वियां, समणियां उच्च अध्ययन और पी.एच.डी. आदि

करें तो उनके लिए भी यह योगक्षेम वर्ष स्वर्णिम काल के समान हो सकता है। जैन विश्व भारती और ग्रन्थागार आदि के रूप में सारी सामग्रियां उपलब्ध हो सकती हैं।

विश्वविद्यालय से संबंधित अध्ययन और महाप्रज्ञ श्रुताराधना आदि के पाठ्यक्रमों में भी समय लगाकर ज्ञान के क्षेत्र में अच्छा विकास किया जा सकता है। उसमें भी मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में उपस्थित होना और सामूहिक रूप में कोई चर्चा और ज्ञान की बात हो तो बहुत अच्छी बात हो सकती है। इस प्रकार यह योगक्षेम वर्ष हमारे स्वयं के विकास का एक महत्वपूर्ण अवसर बन सकता है।

आचार्यश्री की अनुज्ञा से नवदीक्षित साध्वी व समणी ने संत वृंद को वंदन किया तो संत वृंद की ओर से मुनि धर्मरूचिजी ने नवदीक्षित साध्वीजी और समणीजी के प्रति मंगलकामना की। तदुपरांत बहिर्विहार से गुरु सन्निधि में पहुँची साध्वी वृंद और समणी वृंद ने आचार्य प्रवर, मुख्य मुनिश्री और संत वृंद से खमत खामणा करते हुए सुख पृच्छा की तो संत वृंद की ओर से मुनि धर्मरूचिजी ने साध्वी वृंद और समणी वृंद से खमत खामणा व मंगलकामना की।

मुनि कौशल कुमारजी ने अपनी भावाभिव्यक्ति देते हुए गीत का संगान किया। मुनि विनोद कुमारजी ने भी अपनी श्रद्धा की अभिव्यक्ति दी।

ज्ञान से बड़ा कोई गुरु नहीं : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनू।

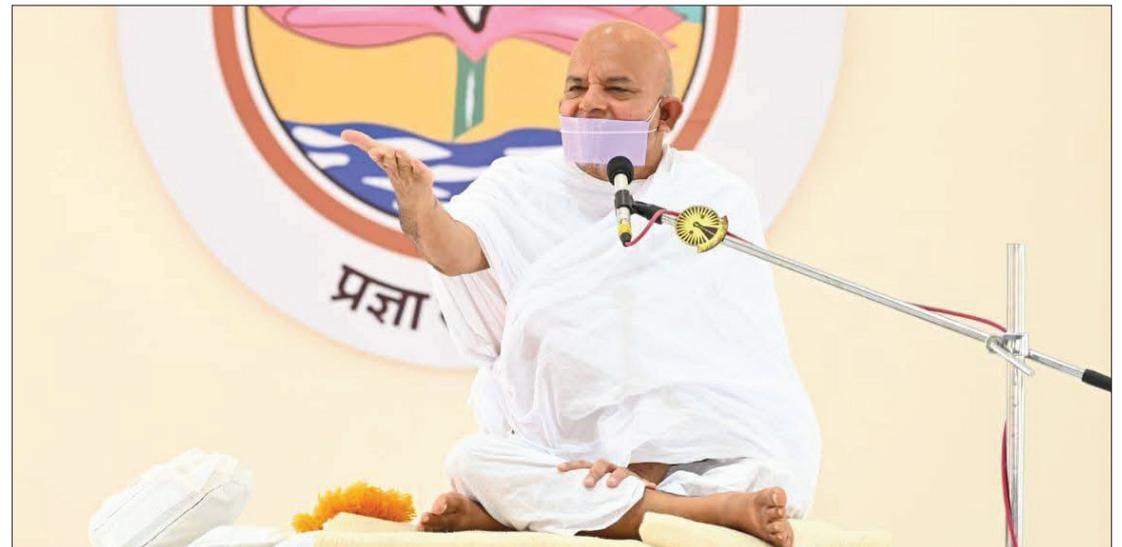
22 फरवरी, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, महातपस्वी युगप्रधान आचार्यश्री के मंगल महामंत्रोच्चार के साथ आज के कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। साध्वी वृंद द्वारा प्रज्ञा गीत का संगान किया। शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी ने समुपस्थित चतुर्विध धर्मसंघ को अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि आध्यात्मिक वाङ्मय में मोक्ष-मुक्ति की बात आती है और जीवन का परम, अनुत्तर और अंतिम लक्ष्य मोक्ष होना चाहिए।

मोक्ष मार्ग चार अंगों वाला बताया गया है - ज्ञान, दर्शन, चरित्र और तप। ज्ञान से जीव भावों की, पदार्थों को जानता है,

दर्शन से श्रद्धा करता है, चरित्र से कर्मों के आगमन के मार्ग को निरूद्ध करता है और तप से आत्मा का परिशोधन करता है।

ज्ञान अपने आप में एक लब्धि है। दुनिया में अपार ज्ञान है। इतना अध्ययन करना सामान्य व्यक्ति के लिए मुश्किल है। व्यक्ति के पास समय बहुत थोड़ा है तथा जीवन में अनेक कार्य तथा कठिनाईयां भी आ सकती हैं, ऐसी स्थिति में मार्गदर्शन दिया गया है कि जो सारभूत हो और अपने लिए उपयोगी हो, वैसे ज्ञान को ग्रहण करना चाहिए, जिस प्रकार हंस पानी में से दूध को निकाल लेता है। पुस्तकें ज्ञान प्राप्ति का एक माध्यम हैं। यद्यपि पुस्तकें, आगम आदि अजीव हैं फिर भी आगमों का सम्मान करना चाहिए। आगम को पढ़ें तो उन्हें अच्छे स्थान पर रखने का प्रयास



करना चाहिए। सभी को ज्ञान की आराधना में अपने समय को नियोजित करने का प्रयास करना चाहिए।

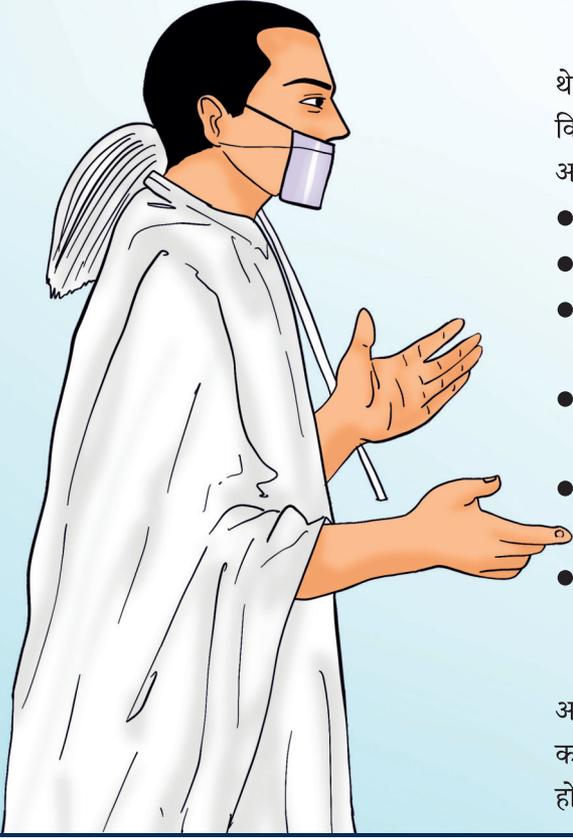
परम पूज्य आचार्यवर ने आज भी

साधु-साध्वियों, समणियों को चिंतन हेतु बिंदु प्रदान किए। तत्पश्चात् जिज्ञासाएं प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया। अनेक साधु-साध्वियों समणियों ने अपनी

जिज्ञासाएं प्रस्तुत की तथा आचार्य प्रवर ने समाधान प्रदान किया। यह दृश्य उपस्थित चरित्रात्माओं के साथ ही श्रद्धालुओं के लिए भी ज्ञान वर्धक रहा।

आचार्य भिक्षु : जीवन दर्शन

विभज्यवाद-1



आचार्यश्री भिक्षु विभज्यवाद के प्रवक्ता और प्रयोक्ता थे। उन्होंने प्रत्येक शब्द या प्रश्न का विभाग से उत्तर दिया। किसी ने पूछा- 'समाजोपयोगी प्रवृत्ति करना क्या धर्म है?' आचार्य भिक्षु ने कहा- धर्म शब्द के अनेक अर्थ होते हैं-

- स्वभाव- जैसे उष्णता अग्नि का धर्म है।
- कर्तव्य- जैसे राष्ट्र की सुरक्षा करना सैनिक का धर्म है।
- सहयोग- जैसे असहायों की सहायता करना समाज का धर्म है।
- व्यवस्था- जैसे नगर की व्यवस्था करना नगरपालिका का धर्म है।
- न्याय- जैसे अपराधी को दण्ड देना न्यायाधीश का धर्म है।
- आध्यात्मिक चरण- जैसे ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप की आराधना करना आध्यात्मिक धर्म है।

'तुम किस अपेक्षा से पूछ रहे हो?' यदि आध्यात्मिक आचरण की दृष्टि से पूछ रहे हो तो समाजोपयोगी प्रवृत्ति करना धर्म नहीं है। यदि कर्तव्य आदि की अपेक्षा से पूछ रहे हो तो उसे धर्म कहने में किसे आपत्ति हो सकती है?

भिक्षु की कहानी जयाचार्य की जुबानी

गधे की बात क्यों करते हैं?

किसी ने पूछा- जंगल में कोई साधु थक गया। सहज-भाव से कोई बैलगाड़ी आ रही थी। उस बैलगाड़ी पर साधु को बिठा कर गांव में लाया गया, उससे क्या हुआ?

तब स्वामीजी बोले- बैलगाड़ी नहीं, किंतु सवारी के गधे आ रहे थे। उन पर बिठा कर साधु को गांव में लाया गया, उसको क्या हुआ?

तब वह बोला- गधे की बात क्यों करते हैं?

तब स्वामीजी बोले- तुम बैलगाड़ी में बिठा कर लाने में धर्म कहते हो तो गधे पर बिठा कर लाने में भी धर्म होगा। साधु तो उन दोनों की ही सवारी नहीं कर सकता।



जानें तेरापंथ को-पहचाने स्वयं को

जैनी जीवन शैली-1

प्रत्येक व्यक्ति की अपनी-अपनी Life Style होती है। अलग-अलग मान्यताओं, परंपराओं में जीवन जीने की कला के बारे में विस्तार से निर्देश प्राप्त होते हैं। जैन दर्शन में नौ ऐसे-ऐसे मंत्र दिए हैं जो जैनी जीवन शैली की अद्भुत पूर्णता को दर्शाते हैं: जो इस प्रकार हैं-

1. समता एवं सम्यक दर्शन

अर्थात्, हमारा दृष्टिकोण सम्यक् हो तथा समता का विकास हो।

सम्यक् दर्शन का यह उद्देश्य है-

- सही दृष्टिकोण व सम्यक् विचारधारा का विकास।
- तटस्थ भावों का विकास।
- उपशमन तीव्रतम कषाय चतुष्टय- क्रोध, मान, माया, लोभ का।

2. अनेकान्त

एक ऐसा सिद्धान्त जो सबका प्रिय है। इस शैली से जीवन जीने के फलित

- सापेक्ष व समन्वय के दृष्टिकोण का विकास।



- सामंजस्यपूर्ण मनोवृत्ति का विकास।

- अनाग्रह और विनम्रता की मनोवृत्ति का विकास।

क्या आप जानते हैं?



मौसम्बी, संतरा, माल्टा और किन्नु का मोटा छिलका व बीज अलग हो जाने के बाद उनके अवशेष भाग को अचित्त माना जाए। उनके पतले छिलके को सचित्त नहीं माना जाए।

साप्ताहिक प्रेरणा

15 मिनट प्रेक्षा ध्यान करें।

जैन विश्व भारती में योगक्षेम वर्ष का शुभारंभ

अहिंसा, संयम और तप रूपी धर्म रहे हमारे साथ : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं।

19 फरवरी, 2026

जैन विश्व भारती में लगभग 37 वर्षों बाद योगक्षेम वर्ष के शुभारंभ का सुअवसर। जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशस्ता, अखण्ड परिव्राजक, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी जैन विश्व भारती परिसर के 'सुधर्मा सभा' में पधारे तो पूरा वातावरण जय घोष से गुंजायमान हो उठा। आचार्यश्री के मंगल महामंत्रोच्चार के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। साध्वी वृंद ने प्रज्ञा गीत का संगान किया।

शांति दूत आचार्यश्री महाश्रमणजी ने उपस्थित चतुर्विध धर्मसंघ को योगक्षेम वर्ष के मंगल शुभारंभ के सुअवसर पर मंगल पार्थेय प्रदान करते हुए फरमाया कि योगक्षेम वर्ष सन् 2026-2027 के शुरू हो चुकने की मैं घोषणा करता हूँ। आगम में योगक्षेम शब्द आया है। योगक्षेम वर्ष के नाम में दो शब्द योग और क्षेम, दो शब्दों का समस्त रूप है, यह हमारा आगम का आधार है। आगम में यह शब्द 'योगक्षेम' आया है अतः यह मानना चाहिए कि आगमिक आधार पर योगक्षेम



वर्ष का नामकरण हुआ है। भगवान ऋषभ और भगवान महावीर से जुड़ा हुआ हमारा जैन शासन है और इस जैन शासन के अन्तर्गत दिगम्बर और श्वेतांबर ये दो धाराएं बह रही हैं। श्वेतांबर धारा में एक आम्नाय तेरापंथ है जिसके प्रवर्तक आद्य अनुशास्ता परम पूज्य आचार्यश्री भिक्षु हुए हैं। आचार्य भिक्षु की परंपरा में उनके उत्तराधिकारियों की परंपरा चली। उनके अनंतर उत्तराधिकारी आचार्य श्री भारमल जी स्वामी हुए और आचार्य

परंपर आगे बढ़ी जिसमें अष्टम आचार्य श्री परम स्तवनीय आचार्यश्री कालूगणी हुए। आचार्यश्री कालूगणी का जन्म स्थान लाडनूं के निकट ही 'तालछापर' है। उनके समय में धर्मसंघ का विकास भी हुआ। विशेष बात यह है कि उनके द्वारा दीक्षित सुशिष्य मुनि तुलसी और मुनि नथमलजी (टमकोर) हमें आचार्य के रूप में प्राप्त हुए। कालूगणी के अनंतर उत्तराधिकारी परम श्रद्धेय आचार्यश्री तुलसी व उसके बाद परम स्तवनीय

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी हुए। उनके दोनों ही सुशिष्य जो हमें आचार्य प्रवर के रूप में मिले वे दोनों ही आचार्य 'युगप्रधान' की गरिमा से भी मंडित हुए थे। ये दो आचार्य ऐसे हुए हैं, जिनको हम में से कईयों ने प्रत्यक्ष भी देखा है, उन्हें नमन भी किया है और पूज्य कालूगणी हमारे गुरुओं के भी गुरु थे, आज परम पूज्य कालूगणी का जन्म दिवस है।

आचार्यश्री तुलसी के समय योगक्षेम वर्ष प्रारंभ भी हुआ था और संपन्न भी हुआ था। लगभग उसी प्रांगण में आज योगक्षेम वर्ष की पुनरावृत्ति हुई है। आचार्यश्री तुलसी के जीवन के 75वें वर्ष के उपलक्ष्य में सन् 1989-1990 में वह आयोजित हुआ था। उस योगक्षेम वर्ष की आयोजना में महाश्रमणी साध्वी प्रमुखा कनकप्रभाजी ने आचार्यश्री तुलसी के समय भी योगक्षेम वर्ष का निवेदन रखा था और उन्होंने ही मेरे सामने भी उसका निवेदन रखा था। उनके कथन को स्वीकार कर योगक्षेम वर्ष की घोषणा की। आज कई वर्षों बाद वह घोषणा साकार हुई है। जिन्होंने निवेदन किया था वे तो अब सदेह उपस्थित नहीं हैं परन्तु उस निवेदन के संदर्भ में साध्वी प्रमुखा अब विश्रुत विभाजी को मान लेता

हूँ। आज योगक्षेम वर्ष प्रारंभ हो गया है। हमारे धर्मसंघ के लिए यह योगक्षेम वर्ष खूब अच्छा सिद्ध हो, मंगलमय हो। इस वर्ष के दौरान यदि हम अहिंसा की आराधना करते हैं, संयम की साधना करते हैं और तपते हैं तो अहिंसा, संयम और तप रूपी धर्म हमारे साथ है तो यह वर्ष मंगलमय हो ही जाएगा। अनन्तर पूर्ववर्ती तीन दिनों में अनुष्ठान का क्रम चला इससे माना कि योगक्षेम वर्ष रूपी प्रसाद का शिलान्यास हो गया था। अब योगक्षेम वर्ष की कालावधि शुरू हो चुकी है। यह वर्ष यथा संभव हमारे लिए विकास में सहायक बने। इस वर्ष में अनेक विषयों जैसे तत्त्वज्ञान, प्रेक्षाध्यान, जैन दर्शन, तेरापंथ दर्शन, आदि के प्रशिक्षण का कार्य चलता रहे। साथ ही यह वर्ष चिंतन, मंथन, मनन के लिए भी हो सकता है। आचार, विचार, संस्कार, साधना, आदि के संदर्भ में चिंतन-मंथन करें कि कैसे हमारे धर्म संघ की साधना पुष्ट हो, वर्धमान हो। इस प्रकार एक आयाम प्रशिक्षण और दूसरे आयाम चिंतन-मंथन के द्वारा योगक्षेम वर्ष को अच्छा बनाने का प्रयास किया जा सकता है।

(शेष पेज 9 पर)

आचार्यश्री महाश्रमणजी : चित्रमय झलकियां

